लक्ष्मी-गणेश की पूजा के पीछे एक गहरा रहस्य



हिंदू धर्म में दीवाली के पर्व को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस अवसर पर माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा-अर्चना करने का विधान है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, लक्ष्मी और गणेश की साधना करने से सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है और धन लाभ के योग बनते हैं। माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा अत्यंत फलदायी और कल्याणकारी मानी जाती है, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि मां लक्ष्मी का गणपति बप्पा से क्या संबंध है? गणेश पुराण में बताया गया है कि मां लक्ष्मी ने भगवान गणेश को अपना दत्तक पुत्र बनाया था। अब ऐसे में सवाल उठता है कि धन की देवी मां लक्ष्मी ने गणेश जी को दत्तक पुत्र क्यों बनाया? पौराणिक कथाओं के अनुसार, एक बार बैकुंठ धाम में जगत के पालनहार भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी के बीच चर्चा हो रही थी। चर्चा के दौरान देवी ने भगवान विष्णु से कहा, मैं अपने भक्तों को धन-धान्य, ऐश्वर्य और सौभाग्य प्रदान करती हूं। मेरी कृपा से ही भक्तों को जीवन में सभी तरह के सुखों की प्राप्ति होती है। इसलिए मेरी पूजा ही सर्वश्रेष्ठ है। भगवान विष्णु उनका यह अहंकार समझ गए। प्रभु ने देवी के अहंकार को दूर करने का फैसला लिया और कहा, देवी, आप श्रेष्ठ जरूर हैं, लेकिन आपका नारीत्व अभी भी अधूरा है। भगवान विष्णु ने आगे कहा, जब तक किसी स्त्री को मातृत्व का सुख नहीं मिलता, तब तक उसे पूर्ण नहीं माना जाता। यह बात सुनकर मां लक्ष्मी अत्यंत दुखी हुईं। इसके बाद वे माता पार्वती के पास पहुंचीं और उन्हें अपनी यह पीड़ा बताई। तब माता पार्वती ने अपने पुत्र गणेश को उन्हें दत्तक पुत्र के रूप में सौंप दिया। भगवान गणेश को पुत्र के रूप में पाकर मां लक्ष्मी अत्यंत प्रसन्न हुईं। उन्होंने उसी समय यह वरदान दिया कि किसी भी भक्त को धन, सफलता और ऐश्वर्य का पूर्ण फल तभी मिलेगा, जब वह लक्ष्मी और गणेश की एक साथ आराधना करेगा। यही वजह है कि दीवाली के दिन मां लक्ष्मी के साथ भगवान गणेश की उनके दत्तक पुत्र के रूप में पूजा-अर्चना करने का विधान है। सनातन परंपरा में मां लक्ष्मी के साथ उल्लू और मोर, दोनों का संबंध बहुत गहरा है। उल्लू अंधेरे में भी देख सकता है, जिससे हमें हमेशा चौकन्ना रहने, आगे की सोचने और समझदारी से काम लेने की सीख मिलती है। वहीं दूसरी तरफ, मोर सुंदरता और पवित्रता की निशानी है। यह बुराई को मिटाने और सादगी के साथ जीवन में संपन्नता लाने का प्रतीक है। मां लक्ष्मी द्वारा गणेश जी को दत्तक पुत्र बनाने से यह संदेश मिलता है कि व्यक्ति को जीवन में दिखावे या अहंकार में आकर अपना विवेक और समझदारी नहीं खोनी चाहिए। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान गणेश की साधना करने से सही फैसले लेने की बुद्धि मिलती है और शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। मां लक्ष्मी की पूजा के दौरान लक्ष्मी-विनायक मंत्र का जप जरूर करना चाहिए। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस मंत्र का जप करने से धन लंबे समय तक टिकता है और बचत में वृद्धि होती है। साथ ही नौकरी, करियर या व्यापार में आ रही अड़चनों को भगवान गणेश दूर करते हैं।

धन, सफलता और ऐश्वर्य का पूर्ण फल तभी मिलेगा, जब वह लक्ष्मी और गणेश की एक साथ आराधना करेंगे

गणेश पुराण में बताया गया है कि मां लक्ष्मी ने भगवान गणेश को अपना दत्तक पुत्र बनाया था

धनलक्ष्मी के आगमन का पर्व धनतेरस



दीपोत्सव पर्व पर धनतेरस का पावन पर्व काफी हर्ष व उल्लास के साथ मनाने की पौराणिक परम्परा है। धनतेरस से ही दीपावली पर्व का शुभारम्भ हो जाता है। इस बार 6 नवम्बर, शुक्रवार, कार्तिक कृष्णपक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन धनतेरस का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। ज्योतिषविद् विमल जैन ने बताया कि कार्तिक कृष्णपक्ष की त्रयोदशी तिथि 6 नवम्बर, शुक्रवार को दिन में 10 बजकर 31 मिनट पर लगेगी, जो कि 7 नवम्बर, शनिवार को दिन में 10 बजकर 49 मिनट तक रहेगी, तत्पश्चात् चतुर्दशी तिथि लग जाएगी। हस्त नक्षत्र 5 नवम्बर, गुरुवार को अर्द्धरात्रि के पश्चात् 3 बजकर 56 मिनट से 6 नवम्बर, शुक्रवार को अर्द्धरात्रि के पश्चात् 4 बजकर 44 मिनट तक रहेगा, तत्पश्चात् चित्रा नक्षत्र प्रारम्भ हो जाएगा। विष्कुंभ योग 5 नवम्बर, गुरुवार को अर्द्धरात्रि के पश्चात् 5 बजकर 10 मिनट से 6 नवम्बर, शुक्रवार को अर्द्धरात्रि के पश्चात् 4 बजकर 10 मिनट तक रहेगा। धनतेरस के दिन आरोग्य के देवता आयुर्वेद शास्त्र के जनक श्री धन्वन्तरि जी का जन्म महोत्सव भी धूम-धाम से मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि समुद्र मन्थन के समय धन्वन्तरि जी अमृत का कलश लेकर अवतरित हुए थे। भगवान धन्वन्तरि जी को आयुर्वेद के प्रवर्तक तथा श्रीविष्णु भगवान के अवतार के रूप में माना जाता है। इस दिन धन्वन्तरि जी की पूजा-अर्चना से आरोग्य-सुख तथा उत्तम स्वास्थ्य का सुयोग बनता है। व्यवसायी एवं व्यापारी वर्ग शुभ मुहूर्त में बही-खाता एवं प्रयोग में आनेवाली अन्य वस्तुएँ भी खरीदते हैं। धनतेरस को सम्पूर्ण दिन में अभिजीत मुहूर्त दिन में 11 बजकर 36 मिनट से 12 बजकर 24 मिनट तक सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त माना गया है। धन-सम्पत्ति के लिए धनाधिपति श्रीकुबेर देवता की भी पूजा करनी चाहिए। देवकक्ष में पूजा स्थल पर दीपक प्रज्वलित करना चाहिए। पूजा का सर्वोत्तम समय (काशी में) वृषभ लग्न सायं 5 बजकर 45 मिनट से रात्रि 7 बजकर 41 मिनट तक रहेगा। प्रदोषकाल का समय विभिन्न शहरों का अलग-अलग होता है, जो कि स्थानीय पंचांगों में दिया रहता है। धनतेरस के दिन शुरू किए हुए शुभकार्यों में स्थायी लाभ के साथ ही अच्छी सफलता का सुयोग बनता है। घर, कार्यस्थल व व्यावसायिक प्रतिष्ठान को आलोकित (प्रकाशमय) रखना चाहिए। धनतेरस का पर्व अपने पारिवारिक धार्मिक परम्परा के साथ मनाना शुभ रहता है।



कलश की अवधारणा को लेकर नये बर्तन और आभूषण खरीदना शुभ फलकारी

धनतेरस के पावन पर्व पर लक्ष्मी-गणेश जी मूर्ति के साथ ही पूजन सामग्री खरीदने की परम्परा है। इस बर्तन के अतिरिक्त नवीन वस्त्र, रजत व स्वर्ण के आभूषण व सोने-चाँदी के सिक्के एवं अन्य मांगलिक वस्तुएँ खरीदने से सौभाग्य में अभिवृद्धि होती है। आज के दिन बर्तन खरीदने से अधिक लाभ एवं लक्ष्मी का स्थायी निवास मिलता है। सायंकाल स्नान के पश्चात् स्वच्छ (धुले हुए) वस्त्र धारण करके अपने आराध्य देवी-देवता की पूजा-अर्चना के बाद प्रदोषकाल व शुभ मुहूर्त में संकल्प लेकर श्रीगणेश जी, श्रीलक्ष्मीजी तथा धन के देवता श्रीकुबेर जी की श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ पूजा-अर्चना करनी चाहिए।

ब्रह्मा मंदिर-तीन कमल पुष्पों से जुड़ी पौराणिक कथा

राजस्थान के पुष्कर को हिंदू धर्म के प्रमुख और पवित्र तीर्थस्थलों में गिना जाता है। यहां बना ब्रह्मा मंदिर देश के उन खास मंदिरों में से एक है, जहां भगवान ब्रह्मा की पूजा-अर्चना होती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, पुष्कर का संबंध ब्रह्मदेव के यज्ञ और तीन कमल के फूलों से जुड़ा है। पुष्कर सरोवर, ब्रह्मा मंदिर और माता गायत्री व सावित्री के मंदिर इस जगह को विशेष धार्मिक महत्व देते हैं। यहां आने वाले भक्त सबसे पहले पुष्कर सरोवर के पवित्र घाटों पर स्नान करते हैं। इसके बाद ब्रह्मदेव के दर्शन करते हैं और माता गायत्री, सावित्री व सरस्वती के मंदिरों में पूजा-अर्चना कर अपने परिवार की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना करते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, एक बार भगवान ब्रह्मा यज्ञ करने के लिए किसी पवित्र स्थान की तलाश कर रहे थे। इसके लिए उन्होंने तीन कमल के फूल आकाश से पृथ्वी पर गिराए। ये तीनों फूल अलग-अलग स्थानों पर गिरे और वहां पवित्र तीर्थों की स्थापना हुई। पहले फूल के गिरने से ज्येष्ठ पुष्कर, दूसरे से मध्य पुष्कर और तीसरे से कनिष्ठ पुष्कर तीर्थ बना। मान्यता है कि ब्रह्मदेव ने ज्येष्ठ पुष्कर को अपने यज्ञ के लिए चुना था। पुष्कर सरोवर में स्नान करने के बाद श्रद्धालु ब्रह्मा मंदिर पहुंचते हैं। यहां भक्त 'ब्रह्मदेवाय नमः' मंत्र का जाप करते हुए भगवान के दर्शन करते हैं। मंदिर परिसर में



चांदी से बनी कछुए की प्रतिमा आकर्षण का केंद्र है। इसके अलावा यहां एक छोटा चांदी का मंदिर भी है, जिसमें भगवान ब्रह्मा की संगमरमर से बनी सुंदर प्रतिमा स्थापित है। मंदिर के बाहर ब्रह्मदेव के वाहन हंस की प्रतिमा भी देखने को मिलती है। भक्त यहां इंद्र और भगवान शिव की प्रतिमाओं के दर्शन भी करते है। पुष्कर सरोवर को हिंदू धर्म के पांच प्रमुख पवित्र सरोवरों में विशेष स्थान प्राप्त है। मान्यता है कि इसमें स्नान करने से पापों से मुक्ति मिलती है और आत्मिक शांति प्राप्त होती है। ब्रह्मा मंदिर के दर्शन के बाद श्रद्धालु पास ही स्थित माता गायत्री के मंदिर पहुंचते हैं। यहां भक्त माता से अपनी मनोकामनाएं पूरी करने और परिवार की खुशहाली की प्रार्थना करते हैं। पुष्कर यात्रा के दौरान श्रद्धालु पर्वत पर बने माता सावित्री के मंदिर भी जाते हैं।

धनतेरस की खरीदारी में शामिल करें छह शुभ वस्तुएं

धनतेरस पर सोना और चांदी खरीदने की परंपरा काफी पुरानी है। माना जाता है कि इस दिन खरीदे गए सोने-चांदी से घर में लक्ष्मी का स्थायी निवास होता है। यदि सोना खरीदना संभव न हो तो चांदी का सिक्का या छोटी वस्तु भी खरीदी जा सकती है। नए बर्तन खरीदना शुभ माना जाता है। खासकर पीतल, तांबा या स्टील के बर्तन खरीदने की परंपरा है। धार्मिक मान्यता के अनुसार नए बर्तन घर में समृद्धि और शुभता लेकर आते हैं। झाड़ू को माता लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है। धनतेरस के दिन नई झाड़ू खरीदकर घर लाने से आर्थिक परेशानियां दूर होने और घर की नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होने की मान्यता है। कई लोग दीपावली की सफाई के लिए इसी दिन नई झाड़ू खरीदते हैं। धनिया के बीज खरीदना भी बेहद शुभ माना जाता है। पूजा के बाद इन बीजों को घर के बगीचे या गमले में बोया जाता है। मान्यता है कि इससे धन और समृद्धि में वृद्धि होती है। अगर घर में नई लक्ष्मी-गणेश प्रतिमा स्थापित करनी हो तो धनतेरस का दिन बेहद शुभ माना जाता है।

नरक चतुर्दशी पर अभ्यंग स्नान की परंपरा का विशेष महत्व

हिंदू धर्म में नरक चतुर्दशी के पर्व का बहुत महत्व है। इसे दिवाली से ठीक एक दिन पहले मनाया जाता है, जिसे छोटी दिवाली या रूप चौदस भी कहते हैं। नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय होने से पहले अभ्यंग स्नान करने का विधान है। इसके अलावा इस दिन यमराज और भगवान कृष्ण की पूजा-अर्चना की जाती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, पूजा करने से सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है और शुभ परिणाम मिलते हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर नरक चतुर्दशी के दिन अभ्यंग स्नान क्यों किया जाता है और इसके पीछे की क्या वजह है? हिंदू धर्म में नरक चतुर्दशी पर अभ्यंग स्नान की एक बेहद खास और प्राचीन परंपरा निभाने का विधान है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले उठकर तिल के तेल और उबटन से स्नान किया जाता है। माना जाता है कि ऐसा करने से पापों और अकाल मृत्यु के भय से छुटकारा मिलता है। पौराणिक कथा के अनुसार, नरकासुर ने इंद्रदेव को हराकर उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया था। इसके बाद नरकासुर ने तीनों लोकों पर कब्जा कर लिया था और वह देवताओं व ऋषियों पर अत्याचार करने लगा। इसलिए कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि पर भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वधकिया। युद्ध समाप्त होने के बाद भगवान श्रीकृष्ण ने शरीर पर लगे रक्त को साफ करने के लिए तेल और उबटन से स्नान किया था, जिसे अभ्यंग स्नान कहा जाता है। इसलिए नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले अभ्यंग स्नान करने का विशेष महत्व है। नरकासुर वध का वर्णन श्रीमद्भागवत पुराण और विष्णु पुराण में मिलता है। नरक चतुर्दशी 7 को है। इस दिन सूर्योदय सुबह ६ बजकर ३7 मिनट पर होगा। इसलिए इस समय से पहले ही अभ्यंग स्नान कर लें। नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले उठें और दिन की शुरुआत देवी-देवता के ध्यान से करें। इसके बाद शरीर और बालों में तिल के तेल की अच्छी तरह मालिश करें। फिर हल्दी, चंदन और बेसन से बना उबटन लगाएं। इसके बाद साफ पानी से स्नान करें।



नरक चतुर्दशी पर अभ्यंग स्नान की एक बेहद खास और प्राचीन परंपरा निभाने का विधान है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले उठकर तिल के तेल और उबटन से स्नान किया जाता है। माना जाता है कि ऐसा करने से पापों और अकाल मृत्यु के भय से छुटकारा मिलता है।

सर्दियों में क्यों बढ़ जाती है आंखों में जलन और सूखेपन की परेशानी?

सर्दियों का मौसम आते ही ठंडी हवाओं और कम नमी का असर हमारी सेहत के साथ-साथ आंखों पर भी पड़ने लगता है। इस दौरान कई लोगों को आंखों में जलन, खुजली, लालिमा और सूखेपन की शिकायत होने लगती है। खासकर बुजुर्गों और पहले से आंखों की समस्या से परेशान लोगों को ज्यादा सावधानी बरतने की जरूरत होती है। वहीं, आजकल बच्चों का अधिक समय मोबाइल, टीवी और दूसरी डिजिटल स्क्रीन के सामने बिताना भी उनकी आंखों की सेहत के लिए चिंता का विषय बन रहा है। ऐसे में जरूरी है कि मौसम बदलने के साथ आंखों की देखभाल पर भी ध्यान दिया जाए। सर्दियों में वातावरण की नमी कम होने और ठंडी हवा के संपर्क में आने से आंखों में सूखेपन की समस्या बढ़ सकती है। इसलिए इस मौसम में आंखों को धूल-मिट्टी और तेज हवा से बचाना जरूरी है। साथ ही, आंखों में किसी भी तरह की परेशानी होने पर खुद से दवा इस्तेमाल करने के बजाय नेत्र विशेषज्ञ की सलाह लेनी चाहिए।



सर्दियों में क्यों बढ़ जाती है आंखों में सूखेपन और जलन की समस्या?

ठंड के मौसम में हवा में नमी कम हो जाती है। ऐसे में आंखों की सतह पर मौजूद आंसुओं की परत जल्दी सूख सकती है, जिससे आंखों में रूखापन, जलन और कुछ चुभने जैसा महसूस हो सकता है। ठंडी हवा सीधे आंखों पर लगने से भी परेशानी बढ़ सकती है। इसके अलावा, सर्दियों में हीटर या ब्लोअर का इस्तेमाल करने से कमरे की हवा और शुष्क हो सकती है। ऐसे वातावरण में लंबे समय तक रहने वाले लोगों को आंखों में सूखापन महसूस हो सकता है। जिन लोगों को पहले से ड्राई आई की समस्या है, उन्हें इस मौसम में अधिक परेशानी हो सकती है। अगर आंखों में बार-बार जलन हो, लगातार लालिमा बनी रहे या देखने में परेशानी होने लगे, तो इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। समय पर डॉक्टर से जांच करवाना जरूरी है।

बच्चों की आंखों पर मोबाइल और गैजेट्स का बढ़ता इस्तेमाल

आजकल छोटे बच्चों का काफी समय मोबाइल, टैबलेट, टीवी और कंप्यूटर की स्क्रीन के सामने बीतता है। ऑनलाइन पढ़ाई, वीडियो देखने और गेम खेलने के कारण उनका स्क्रीन टाइम बढ़ रहा है। लंबे समय तक स्क्रीन देखने पर बच्चे कम पलकें झपकाते हैं, जिससे आंखों में सूखापन और थकान महसूस हो सकती है। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों के स्क्रीन टाइम को सीमित रखें और उन्हें बीच-बीच में आराम करने की आदत डालें। बच्चों को रोजाना बाहर खेलने, पर्याप्त रोशनी में पढ़ने और मोबाइल को आंखों से उचित दूरी पर रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। अगर बच्चा बार-बार आंखें मसलता है, टीवी देखते समय पास जाकर बैठता है, सिरदर्द की शिकायत करता है या किसी चीज को देखने में परेशानी महसूस करता है, तो उसकी आंखों की जांच करवानी चाहिए।

सर्दियों में किन लोगों को आंखों का खास ध्यान रखना चाहिए?

डॉक्टर के अनुसार, सर्दियों में बुजुर्गों और छोटे बच्चों की आंखों की सेहत पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इसके अलावा, कुछ लोगों के लिए नियमित जांच भी जरूरी है।

बुजुर्ग: उम्र बढ़ने के साथ आंखों में सूखेपन और मोतियाबिंद जैसी समस्याओं का खतरा बढ़ सकता है। इसलिए नजर में बदलाव होने पर जांच करवाएं।

डायबिटीज के मरीज: मधुमेह का असर आंखों के पर्दे यानी रेटिना पर पड़ सकता है। ऐसे मरीजों को डॉक्टर की सलाह के अनुसार नियमित रूप से आंखों की जांच करवानी चाहिए।

ग्लूकोमा के मरीज: काला मोतिया या ग्लूकोमा आंखों की रोशनी को नुकसान पहुंचा सकता है। इसकी समय पर पहचान और इलाज बेहद जरूरी है।

छोटे बच्चे: बच्चों में भेंगापन या देखने से जुड़ी किसी परेशानी को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। शुरुआती जांच से सही समय पर इलाज शुरू किया जा सकता है।

सर्दियों में आंखों को स्वस्थ रखने के लिए अपनाएं ये आसान उपाय

बाहर निकलते समय चश्मा पहनें

ठंडी हवा और धूल-मिट्टी से आंखों को बचाने के लिए बाहर निकलते समय चश्मे का इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे आंखों पर सीधे हवा और उड़ते धूल-कणों का असर कम करने में मदद मिलती है।

पौष्टिक आहार लें

अपनी डाइट में हरी पत्तेदार सब्जियां, गाजर, मौसमी फल, मेवे और अन्य पौष्टिक खाद्य पदार्थ शामिल करें। संतुलित आहार आंखों की सामान्य सेहत बनाए रखने में मदद करता है। हालांकि, केवल किसी खास खाद्य पदार्थ को खाने से आंखों की हर समस्या दूर नहीं होती।

मोबाइल और कंप्यूटर से बीच-बीच में ब्रेक लें

लंबे समय तक स्क्रीन देखने से आंखों में थकान और सूखापन महसूस हो सकता है। इसलिए लगातार स्क्रीन देखने के बजाय बीच-बीच में ब्रेक लें। कुछ देर दूर रखी किसी चीज को देखें और सामान्य रूप से पलकें झपकाते रहें।

आंखों को बार-बार न रगड़ें

अगर आंखों में खुजली या जलन हो रही है, तो उन्हें बार-बार हाथों से न रगड़ें। ऐसा करने से परेशानी बढ़ सकती है। आंखों में लगातार तकलीफरहने पर डॉक्टर से सलाह लें।

बिना डॉक्टर की सलाह के आई ड्रॉप न डालें

आंखों में जलन या सूखापन होने पर कई लोग खुद ही मेडिकल स्टोर से आई ड्रॉप खरीदकर इस्तेमाल करने लगते हैं। ऐसा करना नुकसानदायक हो सकता है, क्योंकि हर तरह की परेशानी के लिए एक ही दवा सही नहीं होती। खासकर स्टेरॉयड वाली आई ड्रॉप बिना डॉक्टर की सलाह के इस्तेमाल नहीं करनी चाहिए।

हीटर की हवा सीधे आंखों पर न आने दें

कमरे में हीटर या ब्लोअर का इस्तेमाल करते समय उसकी हवा सीधे चेहरे और आंखों पर न पड़ने दें। बहुत शुष्क वातावरण में लंबे समय तक रहने से आंखों का सूखापन बढ़ सकता है।

सर्दियों में मोतियाबिंद का ऑपरेशन और आंखों की जांच

सर्दियों में मोतियाबिंद के ऑपरेशन करवाने वाले मरीजों की संख्या भी बढ़ सकती है। हालांकि, मोतियाबिंद की सर्जरी करवाने का सही समय केवल मौसम पर निर्भर नहीं करता। मरीज की आंखों की स्थिति, स्वास्थ्य और डॉक्टर की सलाह के आधार पर ऑपरेशन का समय तय किया जाता है। अस्पताल में मोतियाबिंद की सर्जरी के साथ ग्लूकोमा का इलाज, डायबिटीज के मरीजों की रेटिना जांच और बच्चों में भेंगापन जैसी समस्याओं का उपचार भी आंखों की देखभाल का अहम हिस्सा है। समय पर जांच से कई समस्याओं की पहचान की जा सकती है और जरूरत पड़ने पर इलाज शुरू किया जा सकता है।

कब डॉक्टर को दिखाना जरूरी है?

अगर आंखों में लगातार जलन, सूखापन, लालिमा या धुंधला दिखाई देने जैसी परेशानी हो रही है, तो नेत्र विशेषज्ञ से संपर्क करें। आंखों में तेज दर्द, अचानक नजर कम होना या अचानक दिखाई देना बंद होने जैसी स्थिति में तुरंत चिकित्सा सहायता लें।

हूबहू मां श्रीदेवी जैसी दिखीं जान्हवी कपूर



अभिनेत्री जान्हवी कपूर ने इस साल हैलोवीन के मौके पर अपनी दिवंगत मां श्रीदेवी के 1986 के फैंटेसी ड्रामा नगीना वाले आइकॉनिक लुक को फिर से अपनाया। जहां जान्हवी ने श्रीदेवी का रूप लिया, वहीं ओरी ने दिवंगत ऋषि कपूर का किरदार निभाया। फिल्म के पोस्टर से लेकर शूटिंग के दौरान की कुछ झलकियां तक, उन्होंने नगीना की पुरानी यादों को बिल्कुल सटीक तरीके से फिर से जीवंत कर दिया। अपनी खुशी जाहिर करते हुए, मिली अभिनेत्री ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर लिखा, हैप्पी हैलोवीन ! मुझे फिल्मों के सबसे आइकॉनिक पलों में से एक को फिर से रीक्रिएट करना ही था। उन्होंने आगे कहा, आजकल हैलोवीन का मतलब अपने पसंदीदा किरदारों या पॉप कल्चर के मशहूर पलों जैसा तैयार होना हो गया है। कभी ये डरावने होते हैं, कभी मजेदार, तो कभी ये एक तरह की श्रद्धांजलि होते हैं। और मम्मा, ऋषि अंकल और अमरीश सर से ज्यादा आइकॉनिक और कौन हो सकता है !! इस लुक के लिए मुझे थोड़ी मदद भी मिली। उनकी बहन खुशी कपूर ने इस पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए लिखा, तुमने तो हैलोवीन जीत लिया। नगीना की बात करें तो, इस प्रोजेक्ट का निर्देशन हरमेश मल्होत्रा ने किया है, जिन्होंने ईस्टर्न फिल्म्स के बैनर तले इसे प्रोड्यूस भी किया था।



फिल्म की पटकथा रवि कपूर ने लिखी है, जबकि कहानी जगमोहन कपूर ने दी है। नगीना की कहानी रजनी (श्रीदेवी द्वारा अभिनीत) के इर्द-गिर्द घूमती है, जो एक नागिन है। वह एक दुष्ट साधु द्वारा अपने साथी की हत्या का बदला लेने के लिए राजीव से शादी करती है। फिल्म की मुख्य कास्ट में कोमल महुवाकर, अमरीश पुरी, सुषमा सेठ और प्रेम चोपड़ा जैसे कलाकार भी शामिल हैं। 28 नवंबर 1986 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई नगीना बॉक्स ऑफिस पर बहुत बड़ी हिट साबित हुई। यह 1986 की दूसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली भारतीय फिल्म थी। फरवरी 2018 में दुबई में 54 साल की उम्र में श्रीदेवी का निधन हो गया। उनकी मौत का कारण दुर्घटनावश पानी में डूबना बताया गया।

आपसे घटिया कोई नहीं, सलमान खान ने स्काउट को सुनाई खरी-खोटी

पहले से तय कुछ कामों की वजह से पिछले वीकेंड का वार में शामिल न हो पाने के बाद, बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान बिग बॉस 20 में होस्ट के तौर पर वापस आ गए हैं। ऐसा लगता है कि वे किसी को भी बख्शने के मूड में नहीं हैं और कंटेस्टेंट्स की गलतियों पर उन्हें जमकर फटकार लगा रहे हैं। आने वाले एपिसोड के प्रोमो में, सलमान खान स्काउट को फटकार लगाते हुए दिख रहे हैं। पिछले वीकेंड का वार में भी रोहित शेट्टी और स्काउट की गर्लफ्रेंड काशवी ने, साथी कंटेस्टेंट लव गिल के साथ स्काउट की बढ़ती नजदीकियों और उन्हें मसाज देने की उनकी आदत को लेकर उनसे सवाल-जवाब किए थे। सलमान ने स्काउट से पूछा कि जब वह लव गिल को अपनी बहन जैसी दोस्त मानते हैं, तो फिर उनके बचाव में क्यों नहीं खड़े हुए?